



SHRI BIKRAM BAHADUR JAMATIA

Shri Bikram Bahadur Jamatia, retired. Under Secretary, Government of Tripura, former Okra, Jamatia Hoda (Community Chief of Jamatia Community) & Founder President, Janajati Faith & Culture protection Forum, Social Service is known for his works for tribal communities of North East India.

2. Born on 1st October, 1939, Shri Jamatia joined in Government Service as Tribal Colony Supervisor. Later he joined in Civil Secretariat service in the year 1967, where he formed Tribal Employees organization known as TUKS (Tripura Upajati Karmachari Samiti). He retired from service in 1997 as Under Secretary. Just a month later he was selected as Okra (Community Chief) of Jamatia Hoda (Community).

3. Shri Jamatia found that extremist in the area had destroyed peaceful community system. He formed thousands of community volunteer force to counter terrorism. He was provided with personal security by Government. In the long run extremists were compelled to leave Tripura & took shelter in Bangladesh and to surrender to the Government. His five years tenure of Community Chief was a great achievement and appreciated by all concerned quarters.

4. By dint of these activities there was a call from all Janajati leaders of North East seven sister state to form a united organization to restore Janajaties faith & culture. Accordingly, an organization named "Janajati Faith & Culture protection forum" was formed in 2002. He became founder president of the forum. The activities of the forum spread all over North East state of Nagaland, Arunachal Pradesh, Manipur, Meghalaya, Mizoram raising a slogan "Jagta Purbanchal" promising to restore Janajaties faith & culture. In 2006 in Guwahati in Nehru Stadium in a gathering of historic movement from 24 to 28 December 2006, a declaration was made that all Janajaties customary laws to be enacted in all 6th scheduled areas of District Council. Accordingly, Janajati forum activities are going on.

5. Shri Jamatia has been honoured with many awards such as Janajati Krantikari Samman given by Punbanchal Kalyan Ashram Kolkata & Howrah Mahanagar (2001), World Council of Ancient Tradition & Culture - by ICCS, Nagpur (2003), Prestigious VKIC Samman (2004), N.R. works Samman by A.B.V.K.A. Golden Jubilee function (2004), 11th Baurao Deorash Samman (2006), Guruji Puruskar (2008), Uttar Purba Bharat Gyan Gyapan Govesana Kendra (2013), My Home India ONE India Award (2015) and National Integration Award, (2018) and Pandit Dindayal Upadhyay Govt. of Tripura (2018) etc.



श्री बिक्रम बाहादुर जमातिया

श्री बिक्रम बाहादुर जमातिया त्रिपुरा सरकार के सेवानिवृत्त अवर सचिव, पूर्व ओकरा, जमातिया होदा (जमातिया समुदाय के मुखिया) और जनजाति फेथ एंड कल्चर प्रोटक्शन फोरम, सोशल सर्विस के संस्थापक अध्यक्ष हैं और उन्हें उत्तर-पूर्व भारत के जनजातीय समुदायों के प्रति सेवा कार्यों के लिए जाना जाता है।

2. 1 अक्टूबर, 1939 को जन्मे, श्री जमातिया जनजातीय कॉलोनी पर्यवेक्षक के रूप में सरकारी सेवा में शामिल हुए। इसके बाद, वह वर्ष 1967 में सिविल सचिवालय सेवा में शामिल हुए, यहां उन्होंने जनजातीय कर्मचारी संगठन बनाया जिसे टीयूकेएस (त्रिपुरा उपजाति कर्मचारी समिति) के नाम से जाना जाता है। वह 1997 में अवर सचिव के रूप में सेवानिवृत्त हुए। सिर्फ एक महीने बाद उन्हें जमातिया होदा (समुदाय) के ओकरा (समुदाय मुखिया) के रूप में चुना गया था।

3. श्री जमातिया ने पाया कि क्षेत्र में उग्रवादियों ने शांतिपूर्ण सामुदायिक व्यवस्था को नष्ट कर दिया है। उन्होंने आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए हजारों सामुदायिक स्वयंसेवक के एक बल का गठन किया। उन्हें सरकार द्वारा व्यक्तिगत सुरक्षा प्रदान की गई थी। लंबे समय बाद, उग्रवादी त्रिपुरा छोड़ने, बांग्लादेश में शरण लेने और सरकार के सामने आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर हुए। समुदाय मुखिया के रूप में उनका पांच वर्ष का कार्यकाल एक बड़ी उपलब्धि थी और सभी संबंधित वर्गों द्वारा इसकी सराहना की गई थी।

4. इन गतिविधियों के आधार पर, उत्तर-पूर्व के सभी जनजाति नेताओं ने उत्तर-पूर्व के सात राज्यों से जनजातीय धर्म और संस्कृति की पुनःस्थापना के लिए एक संयुक्त संगठन बनाने का आह्वान किया। इसके बाद, 2002 में "जनजाति फेथ एंड कल्चर प्रोटक्शन फोरम" नामक एक संगठन बनाया गया। वे फोरम के संस्थापक अध्यक्ष बने। फोरम की गतिविधियां पूरे उत्तर-पूर्व अर्थात् नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम में फैली हुई थीं, जिनमें "जगता पूर्वाचल" का नारा दिया गया था और जनजातीय धर्म और संस्कृति की पुनःस्थापना का वादा किया गया। 2006 में गुवाहाटी के नेहरू स्टेडियम में 24 से 28 दिसंबर 2006 तक आयोजित ऐतिहासिक जनसभा में, यह घोषणा की गई कि जिला परिषद के सभी 6 अनुसूचित क्षेत्रों में सभी जनजातियों के प्रथागत कानून बनाए जाएंगे। तदनुसार, जनजाति फोरम की गतिविधियां चल रही हैं।

5. श्री जमातिया को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिनमें पुनर्बांचल कल्याण आश्रम कलकत्ता और हावड़ा महानगर का जनजाति क्रांतिकारी सम्मान (2001), विश्व प्राचीन परंपरा और संस्कृति परिषद-आईसीसीएस, नागपुर द्वारा सम्मान (2003), प्रतिष्ठित वीकेआईसी सम्मान (2004), ए.बी.वी.के.ए. गोल्डन जुबली समारोह द्वारा एन.आर. कार्य सम्मान (2004), 11वां बाउराव देवरस सम्मान (2006), गुरुजी पुरस्कार (2008), उत्तर प्रदेश भारत ज्ञान ज्ञापन गोवेसना केंद्र का सम्मान (2013), माई होम इंडिया वन इंडिया अवार्ड (2015) और राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, 2018, पंडित दीनदयाल उपाध्याय पुरस्कार, त्रिपुरा सरकार (2018) आदि शामिल हैं।